।। श्री हरिः ।।

स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रिय !
तुम करि कृष्णसेवा फल दीनो
साधनतें सुपने जाने सो
सब निज प्रमेयबल किनों ।।१।।
यह तो विधि अबहि बनि आई
सो सब दैवी सृष्टि मन भाई ।।
सेवा करिके आप सिखाई
जो निगम पुरान में कहुं न बताई ।।२।।
शिव सनकादि सुरेश चतुरानन
करि समाधि कछू न पाई ।।
सो श्रीविट्ठलकी करुनातें
'गोविन्द' मन सदा गुन गाई ।।३।।

हे तादृशवेष्टित! हों जन तिहारौ ।।
साधनहीन बलहीन जानि जिय
भय उपजत हे भारौ ।।१।।
तप स्वाध्याय वैराग्य जोग ज्ञान
बल भक्ति रहित पे नेक तिहारौ ।।
तजि निजधाम अवनीतल प्रकटे
आपुनि आप प्रतिज्ञा पारौ ।।२।।
ऐसी कबहु भई सुनियत नहीं
बिन साधन सब जगत् उद्धारो ।।
यह सुनि शरन तिहारे आयो
रंक 'गोविन्द'को कहो हमारौ ।।३।।